

छोड़ो कृष्ण कन्हैया (१४५)

छोड़ो जी छोड़ो जी श्याम बैयां मोरी पडु पैयां तोड़ी—२

क्यों मेरी गली में आए मेरा दधि का माट गिराये
मोती माला तोड़ कर मेरी दिये राह में सब बिखराये
मेरी फाड़ी चोली मैं हूं भाली भोली नहीं आई होरी ॥१॥

मैं बड़े गोप की लाली क्यों करते श्याम कुचाली
जाय यशोदा से कहि दूंगी फिर बांधेगी बन माली
ओ श्याम नटवर तेरी लूंगी खबर छुट जै हैं चोरी ॥२॥

क्यों राह में रारि मचाओ सब गोकुल माहि हंसाओ
अरे नंद के डीठ लड़िका अब तो तरस कुछ खाओ
तोंहि जोड़ती हूं कर मेरी छोड़ दे डगर हाय कलाई मरोरी ॥३॥

कैसा बाप कैसी महतारी तू कैसा भया बनवारी
तेरा दोष न कोई कान्हा जाये हो रैन अंधियारी
आवे मैगसि मैया अब भागो कन्हैया सुनि है कीरति किशोरी ॥४॥